B.A. III Honours
Paper V
M.A. JOHN

(1)

राजाराम मोहन राय के समाजिक विचार

राजा राम मोहन राय का जन्म 22, मई 1772 ई० को राधा नगर नामक बंगाल के एक गाँव में, पुरानें विचारों से सम्पन्न एक बंगाली Brahmin परिवार में हुआ। उस समय देश कई समाजिक आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं से पीड़ित था, जिसनें धर्म के नाम पर विवाद पैदा कर रखे थे।

गाँव में ही अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करनें के पश्चात पटना के एक मदरसे से अरबी और फारसी की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद वेद तथा उपनिषद का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने विभिन्न महान धर्मों का भी अध्ययन किया और इसी समय उन्हें यह एहसास हुआ कि कुछ हिन्दू परंपराओं और अन्धविश्वासों को सुधारनें की आवश्यकता है।

हमारे समाज में मध्यकालीन युग से धर्म और परम्परा के नाम पर जो अमानवीय कुरीतियाँ फलती फूलती रही थी राजा राम मोहन द्वारा सब से पहले उन्हें दूर करनें की कोशिश की गयी। उनकी विचारधारा धार्मिक सुधार से उतनी अधिक सम्बन्धित नहीं थी जितनी समाजिक सुधार से। समाजिक सुधार पर अपना ध्यान केन्द्रित करनें के बाद भी उन्हों नें धार्मिक सुधार का उपयोग केवल के एक साधन के रूप में किया। वह मूर्ति पूजा के खिलाफ थे और ईश्वर की एकरूपता में विश्वास रखते थे। 1828 ई० में कलकत्ता में उन्होंनें ब्रह्म समाज की स्थापना की। राजा की उपाधि उन्हे अकबर बादशाह नें प्रदान की थी।

②

लन्दन की यात्रा करने वाले वह पहले शिक्षित भारतीय थे जिन्हें अकबर द्वितीय नें लन्दन अपने दूत के रूप में भेजा था।

राममोहन राय के सामाजिक चिन्तन में स्त्रियों के शोषण, जाति प्रथा से उत्पन्न कुरीतियों तथा अज्ञानता के विरुद्ध व्यापक विचार मिलते हैं। उन्होंने एक ओर बहु पत्नी विवाह, बाल विवाह, सती प्रथा, कन्या वध तथा जुआ खुत का व्यापक विरोध किया तो दूसरी ओर अन्तरजातिय विवाहों, स्त्रीयां की शिक्षा तथा विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करके नारी उत्पीडन को दूर करनें के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। भारतीय समाज तथा संस्कृति में सुधार के लिये उन्होंनें जो विचार प्रस्तुत किये उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है।

① सती प्रथा का विरोध: भारत में सब से अधिक अमानवीय कुरीति के रूप में सति प्रथा का चलन था जिसमें विधवा को अपनें पति की चिता के साथ अग्नि में प्रवेश करके स्वंय भी जल कर मर जाना अनिवार्य था उन्होंनें इस प्रथा की घोर निन्दा की और इसे। राम मोहन राय नें 1811 में एक ऐसा दृश्य देखा जिसनें उन्हें इस प्रथा का घोर विरोधी बना दिया और इस सच्चाई को स्पष्ट किया कि अधिकांश व्यक्ति किसी धार्मिक प्रेरणा से नहीं बल्कि विधवाओं के भरण पोषण से छुटकारा पाने के लिये इस अमानवीय प्रथा को बनाये रखना चाहते हैं। 1818 में सती प्रथा के विरुद्ध एक व्यापक आन्दोलन छेड दिया जिसके परिणाम स्वरूप 1829 में लार्ड माउंट बैन्टिक नें 1829 में इसे पूर्णतया

समाप्त करके इसे एक अपराध घोषित कर दिया।

(2) वैवाहिक सुधार। मनुस्मृति के विधान के अनुसार कन्या का विवाह 5-6 वर्ष की आयु में कर देना ही एक धार्मिक व्यवहार समझा जाने लगा था। पुरुषों को एक साथ कई स्त्रियाँ रखने की खुली छूट मिली हुई थी। विधवा के पुनर्विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी तथा अन्तर्जातीय विवाहों को समाज द्वारा अनुमति नहीं प्राप्त थी। राजा राम मोहन राय ने इन सभी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया, और कुरीतियों के विरुद्ध राम मोहन राय वैवाहिक हिन्दुओं की वैवाहिक मान्यताओं में सुधार लाकर स्त्रियों के जीवन को अधिक सम्मानपूर्ण बनाना चाहते थे।

(3) नारी शिक्षा। आप नारी शिक्षा के समर्थक थे। इसके विरोधियों जवाब देते हुए उन्होंने लिखा कि जब ज्ञान की देवी सरस्वती हो सकती है तब स्त्रियों को ज्ञान से वंचित रखने का नैतिक और सामाजिक औचित्य क्या है। अज्ञानता के अंधकार में डूबे तत्कालीन भारतीय समाज में राजा राम मोहन राय को यह पहला व्यक्ति कहा जा सकता है जिन्होंने नारी शिक्षा के अनेक केन्द्र स्थापित करके स्त्रियों को जागरूक बनाने की पहल की।

(4) स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार: राजा राम मोहन राय ने 1822 में 'स्त्रियों को प्राचीन अधिकारों पर आधुनिक आघात' नामक लेख में स्त्रियों के प्राचीन सम्पत्ति अधिकारों का विस्तार

[illegible] भी उन्होंने [illegible]।

(क) आधुनिक भारत का पिता, राजा राम मोहन राय ने [illegible] ब्रह्म समाज की [illegible] 1828 में उन्होंने [illegible] [illegible]

(ख) [illegible] [illegible] England पहुँचने पर उन्होंने [illegible] [illegible]

इसके अतिरिक्त [illegible] [illegible]

[illegible]

5

विस्तार से उल्लेख किया।

(5) जाति प्रथा का विरोध : राजा राम मोहन राय ने जाति प्रथा को भारतीय समाज के लिये एक कलंक के रूप में स्वीकार किया है। 1828 ई० में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना द्वारा औपचारिक और व्यवहारिक आधार पर जाति प्रथा से सम्बन्धित कुरीतियों को दूर करने का व्यापक प्रयास किया।

(6) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का समर्थन : उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत सम्पत्ति अर्जित करने का पूरा अधिकार होना चाहिये। उन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर भी बल दिया। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के प्रति उनकी आसक्ता इस बात से भी स्पष्ट होती है कि England पहुँचने पर उन्होंने ब्रिटिश सम्राट से भी इस विषय पर चर्चा करके भारत में विचारों की स्वतन्त्रता का विरोध करने वाले आदेशों को समाप्त करने की आवश्यकता का विरोध करने वाले आदेशों को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके अतिरिक्त और भी बहुत सारी कुरीतियाँ जो भारतीय समाज में पायी जाती थी उसे समाप्त करने पूरा प्रयास किया। उनके अनुसार कोई भी परिवर्तन उस समय तक नहीं आ सकता है जब तक कि शिक्षा का प्रचार प्रसार न हो उन्होंने कहा कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली द्वारा गणित, समाजिक दर्शन तथा वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। ~~आगे~~ उन्होंने यह भी विचार दिया कि समाज सुधार के लिये लोकतन्त्र एक आवश्यक आधार है।